अमेरिकी रंगमंच

रिचर्ड शेखनर बनाम एन्वायरमेन्टल थियेटर

डा० कमल वाशिष्ठ

गत 26 एवं 27 मार्च 76 को भोपाल के रवीन्द्र नाट्य गृह में म. प्र. कला परिषद् के सहयोग से द परफोर्मेन्स-ग्रुप, न्यूयार्क द्वारा बर्तोल्ड ब्रेख्त का बहु-चर्चित नाटक 'मदर करेज और उसके बच्चे' का प्रदर्शन हुआ। इस अवसर पर दो दिवसीय नाटक' वर्कशॉप का भी आयोजन हुआ जिसमें प्रदेश भर के कला परिषद द्वारा आमन्त्रित विशिष्ट रंगकर्मियों ने भाग लिया, कुछ बेचारे अपने स्वयं के खर्च पर भोपाल में हाजिर हुए, शौक की खाज जो थी। 'मदर करेज और उसके बच्चे' का प्रदर्शन अमेरिका में रिचर्ड शेखनर द्वारा प्रचारित एन्वायरमेन्टल थियेटर के रूप में हुआ। युद्ध की विभीषिका के मध्य अपनी धन-लिप्सा से ग्रस्त 'मदर करेज' उचित-अनुचित की परवाह किए बिना, धन प्राप्ति के लिए युद्धस्थल पर भी व्यापार रत है।

मौत के तांडव के बीच में भी क्रय-विक्रय की यह वीभत्सता ऐसा लगता है कि धन के सामने मानव जीवन तो क्या मृत्यु भी छोटी है। मरे हुए सैनिकों के वस्त्र उतार कर बेचना, इतना ही नहीं अपने बेटे, बेटियों के मरने पर उनके भी वस्त्र उतारकर बेच देना पूंजी-वादी व्यवस्था पर एक सशक्त चोट तो है ही जिसे बर्तोल्ड ब्रेख्त ने द्वितीय महायुद्ध के दौरान प्रत्यक्षतः अनुभूति किया था।

युद्ध की स्थिति में भी पूंजीवादी प्रवृत्ति व्यापा-रिकता के प्रति अधिक सजग रहती है। युद्ध याने धन

कमाई, चाहे जैसे भी, इस दृष्टि से युद्ध पूंजीवादी विचार धारा के लिए वरदान है।

नाट्य प्रस्तुति को निर्देशक रिचर्ड शेखनर ने एन्वायरमेन्टल थियेटर (शैली) के रूप में प्रस्तुत कर, उनके द्वारा खेल, दर्शक और स्थान में स्थान के महत्व को प्रतिपादित करने का प्रयास किया। शेखनर का कथन है कि—जब हम दिल्ली के माडर्न स्कूल में जिमने-शियम में खेलने आए तो एक प्रकार से हमने स्थान की नयी सृष्टि भी की। खेलनेवालों को सोचना होता है कि स्थान विशेष में उसे कैसे किया जाय, जबकि दकिया-नूसी नाटक में स्थान निर्दिष्ट रहता है। जब दर्शक, खेलने वाले और नाटक के साथ-साथ स्थान भी शामिल हो जाते हैं। इस प्रकार उन्होंने नाटक में स्थान और एन्वारयनमेन्ट (वातावरण) का महत्व प्रतिपादित किया है। उनके अनुसार—हर स्थान पर अलग-अलग वातावरण निर्मित होता है, और खेलनेवालों को उसके अनुसार खुद को एडजस्ट करना पड़ता है।

इस प्रकार एन्वायर (वातावरण) नाट्य प्रस्तुति में अपना-अलग महत्व रखता है। उनके विचारों को अधिक स्पष्ट करते हुए 'मदर करेज' की मुख्य'अभि-नेत्री लीनी सैक ने कहा—जब हम किसी स्थान को जाते हैं तो कुछ भौतिक चीजें अपने साथ ले जाते हैं जैसे पोशाकें आदि, नयी चीज तो स्थान ही होता है, वह भी तीसरे अथवा चौथे खेल के बाद पच जाता है, तभी उससे संवाद शुरू होता है। मेरा निजी विचार है कि हमें हर बार नयी जगह जाने पर स्थान का सामना करना पड़ता है और यही वातावरण की निर्मित होती हैं, वस्तुतः शेखनर के विचार नये नहीं हैं, पारम्परिक प्रदर्शन भी एक नगर से दूसरे नगर में प्रदर्शित होने की दशा में प्रदर्शन स्थल की स्थिति के अनुरूप ही ढाले जाते हैं, क्योंकि सभी प्रदर्शन स्थल (प्रेक्षागृह) चाहे वे ढके हों अथवा खुले भिन्न स्थितियों में होते हैं फिर स्थान का चयन कर उसे अपने अनु-रूप ढालना प्रत्युत्पन्नमति निर्देशक का काम है, कि उसका उपयोग कैसे किया जाय? इसमें वातावरण अथवा स्थान की दुहाई देना मात्र बौद्धिक विलास है, वातावरण तो एक ही स्थान पर नित्य प्रदर्शन में भी अलग-अलग हो सकता है, क्योंकि यह दर्शकों की स्थिति पर अधिक निर्भर रहता है वे चाहे बौद्धिक हों अथवा सामान्य मराठी नाट्य क्षेत्र में एक शब्द नाट्य प्रस्तुति के लिए प्रचलित है 'प्रयोग' वस्तुतः प्रत्येक प्रस्तुति अपने आप में प्रयोग ही होती है।

अस्तु वातावरण को भी थियेटर मानकर चलना अमेरिकन पद्धति की चौकानेवाली विचार धारा मात्र ही कही जाएगी, जहाँ चौकाने के लिए ही नये-नये कारोबार या प्रयोग किए जाते हैं। प्रसिद्ध नाट्य निर्देशक राजेन्द्रनाथ के ये विचार अधिक तर्कसंगत और ठोस हैं कि मेरे विचार से ये सब कोरे सिद्धांत हैं जो कि एक हद तक बहुत काम के हो भी सकते है, किन्तु उसके बाद आप्रासंगिक हो जाते हैं। दर्शक सिद्धांतों से नहीं नाटक से ही गरज रखता है।

मेरे विचार से 'मदर करेज' की प्रस्तुति में पश्चिमी देशों की कई नाट्य पद्धतियों की खिचड़ी थी। इसमें कई पद्धतियाँ मौजूद थीं, उदाहरणार्थ वैश्या वृत्ति के संभोग-दृश्य अमेरिका में प्रचलित 'न्यूड थियेटर' का अंश था। इन्टरवल में दर्शकों और अभिनेताओं के मध्य संपर्क-सूत्र स्थापित करने के वास्ते सहभोज (यूनिटी फीस्ट) का आयोजन ब्रिटिश निर्दे-शिका जॉन लिटिज वुड के 'ब्रेड एण्ड पपेट थियेटर, का अंश था। इसी प्रकार दर्शकों के मध्य वस्त्र परि-वर्तन, जापानी नोह नाटकों का अंश था। दर्शकों के बैठने की व्यवस्था और स्थान विशेष पर जाकर अभि-नेता द्वारा संवाद संप्रेषण प्राचीन रशियन 'क्यूबिक थियेटर' पद्धति की देन कही जा सकती है। मूल नाटक ब्रेख्त का होने पर भी उसमें ब्रेख्त की नाट्य पद्धति का अभाव था कारण, ब्रेख्त द्वारा प्रयुक्त मुखौट, अर्ध

मुखौटों का प्रयोग नहीं था, पर वह भी मूल ब्रेख्त से अलग मूल नाटक में गाड़ी और पहिये गति के प्रतीक रूप में प्रयुक्त किए गये हैं, परन्तु शेखनर ने रस्सियों का प्रयोग गाड़ी और पहिए के रूप में किया, इसी प्रकार फालतू समय में अभिनेता को कुन्दों के सहारे रस्सियों पर लटका दिया और उसकी स्थिति दर्शक से दूर कर दी वैसे इसे 'नटगिरी' कहा जाय तो अनुचित नहीं होगा।

वैसे प्रस्तुति की दृष्टि से 'मदर करेज और उसके बच्चे' को सफल प्रस्तुति कहीं जा सकती है विशेषकर उसका अंतिम दृश्य दर्शको को अभिभूत करने मे अत्यधिक सफल रहा, और निर्देशक ने ब्रेख्त की मूल धारणा को बरकरार रखा, मूल नाटक की भावना पूंजी प्राप्ति हेतु निम्नतम उपायों को अपनाए जाने-वाली वीभत्सता के प्रति कारुणिक स्थिति का निर्माण कर उसके शमन का मार्ग सुझाना था। जिसे कुछ हद तक शेखनर प्रस्तुत कर सके। विदेशी प्रस्तुति के आयोजन के लिए म. प्र. कला परिषद् बधाई की पात्र है।

□ □

मार्च '76 में भोपाल में प्रस्तुत
'मदर करेज एण्ड हर चिल्ड्रन'का एक दृश्य